ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

Volume-IV

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು:

ಡಾ. ಪ್ರಕಾಶ ಹಲಗೇರಿ

ಪ್ರೊ. ಅಂಜನಪ್ಪ ಡಿ.

ಶ್ರೀ ಆನಂದಕುಮಾರ ಎಂ. ಜಕ್ಕಣ್ಣವರ

ಶ್ರೀ ಮಂಜುನಾಥಗೌಡ ಶಿ. ಪಾಟೀಲ

ಸಿದ್ದೇಶ್ವರ ಶ್ರೀ ಪ್ರಕಾಶನ, ವಿಜಯಪುರ

ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಕಥನ

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA

VOL- IV

First Impression: 2017

Copyright © ಸಮಷ್ಟಿ ಫೌಂಡೇಶನ್, ಧಾರವಾಡ.

BAHUSHISHTEEYA SAMKATHANA ಬಹುಶಿಷ್ಟೀಯ ಸಂಕಥನ

ISBN: 978-93-84534-95-0

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Price: ₹500/-

Printed by:
Om Print Point, Dharwad

Published by :

I.S Mujawar, Siddheshwar Shri Prakashana, Vijayapur.

Typeset by :
Mr. Jagadeesh K. Angadi
Sai printers.
Dharwad
95357 13213

85. ಡಾ.ವಿಜಯಕುಮಾರ ಹೆಚ್
ಸಮಕಾಲೀನ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಮತ್ತು ಪರಿಹಾರಗಳು 449

86. ಡಿ.ಎಸ್. ಮಠಪತಿ
ವಚನಗಳಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯ ವಿಭಿನ್ನ ನೆಲೆಗಳು 453

87. DR. Madhumalati .G.S.,
'हिन्दी भाषा और भाषा समस्या का समधान' 460

****

'हिन्दी भाषा और भाषा समस्या का समधान'

DR. Madhumalati .G.S.,
Assistant Professor & HOD in Hindi,
A.R.M First Grade College,
S.Nijalingappa Layout, Davangere.

भाषा :

मनुष्य की भावाभिव्याक्ति का सर्वोत्तम साधन भाषा है। मनुष्य के मन में उठ्नेवाले भाव, विचार, इच्छाएँ और अनुभुतियाँ अपने वस्ताविक स्वरुप में निराकार ही होती है । भाषा के माध्यम से ये निराकार से साकर स्वरुप में बदल जाती हैं। वैसे तो मनुष्य अन्य प्राणियों के समान अपने विचारों को विशेष प्रकार की मुद्राओं और भावभांगिमाओं द्वारा भी व्यक्त कर सकता है, परन्तु इस प्रकार की अभिव्याक्ति में अस्पष्टता, कठिनता और निरसता बनी रहती है । इससे यह कहना असंगत न होगा कि मनुष्य के लिए अभिव्यक्ति का एक अत्यन्त सुलभ सरल और उत्तम साधान भाषा है।

भाषा शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में होता है । चेतन ही नहीं जड पदार्थों में भी भाषा की कल्पना की गयी है । पानी की लहरों चट्टानों के उतार-चढाव आदि भी कल्पनाशील व्यक्तियों को कुछ कहने से जान पडते है । इस तरह व्यापक अर्थ में भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है । अभिव्यक्ति के माध्यम विविध है । सीटी बजाना, झंडी दिखाना, हाथ से संकेत करना, खटखटाना, छडी दिखाना, आँखों से रोष प्रकट करना आदि भी अभिव्यक्ति के घेरे की बाते ही हैं।

भाषा की दृष्टि से मनुष्य पशू-पक्षी से भिन्न है। इस भिन्नता का कारण भावों के साथ-साथ मनुष्य ने अपनी बुद्दि के प्रयोग से भावों की अभिव्यक्ति करनेवाली ध्वनियों को कई प्रकार के प्रतीकों मे बांधा है।

भाषा शब्द संस्कृत की "भाषा" धातू मे बना है । भाषा धातू का अर्थ है जो वाणी से व्यक्त हो, पशू-पक्षी की भाषा अव्यक्त होती है । अर्थात उसके शब्द और अर्थ दोनों ही स्पष्ट रूप से समझ में आनेवाले नहीं होते । केवल मनुष्य की भाषा ही व्यक्त भाषा है ।

भाषा की अनेक परिभाषाएँ की है। पश्चिमी भाषाविद "ए सी वुलनर ने भाषा की परिभाषा देते हुए कहा है कि भाषा मानविय वाणी है, और एक ऐसी सक्रियता है जिससे लोग मुख के अवयवों से उच्चारित व्यक्त ध्वनियों के माध्यम से अपने विचारों और भावों को अभिव्यक्त करते है" ।

"मुख से निकली ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भाव और विचारों को व्यक्त करता है भाषा है" ।

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ उसकी भाषा ने भी उत्तम अभिव्यक्ति के लिए विकास कर लिया है। मनुष्य ने अपनी सामाजिकता के दबाव और प्रभाव से विचारों वस्तुओं और कार्यों का किन्ही विशेष शब्दों के साथ साम्बन्ध जोड दिया है ।

हिन्दी भाषा :

जनभाषा से तात्पर्य भाषा के उस रूप मे होता है, जिसे सामान्य लोग सहजता और सरलता से अपनाकर अपनी भावाभिव्यक्ती का माध्यम बना लेते है । इसके विकास की गाति स्वाभाविक होती है । अन्य भारतीय भाषओं के साथ हिन्दी का संपर्क है । यह आसानी से सीखी और समझी जाती है। इसका शब्द भण्डार-आवश्यकता के अनुसार समृद्दि की ओर है । हिन्दी अपनी विशेषताओं में देवनागरी लिपि होना भी बहुत बडी विशेषता है । अशुद्दियों को बडी ही आसानी से और जल्दी दूर किया जा सकता है ।

हिन्दी की विशेषताओं को निम्न रुपों में पाते है:-

(१) हिन्दी अन्य भाषा के आवश्यक और उपयोगी शब्दों को अपने अनुरुप दाल लेती है ।

(२) हिन्दी की शब्द निर्माण क्षमता बहुत है ।

(३) हिन्दी में जैसा उच्चारण किया जाता है। लगभग वैसा ही लिखा जाता है ।

(४) हिन्दी की विभाक्तियों संज्ञा से अलग लिखी जाती है ।

सनु १९५० से भारत की राजभाषा हिन्दी है, पिछले चालीस-पैंतालीस वर्षों में हिन्दी बहुत अधिक विकसित हो गयी है ।

समस्या का समाधान:-

विश्व के तेजी से प्रगति कर रहे सभी. विकासशील देश ऐसा, अंग्रेजी अपनाए बिना, निज, भाषाओं के माध्यम से कर रहे है। भारत में स्थिति उल्टी है, यहाँ अंग्रेजी की जकड बढ रही है और

भारतीय भाषाएं चपरसियों की भाषा हो चली है । इसका प्रमुख कारण है हमारी भाषओं का आपसी वैमनस्य । इसके निराकरण लिए अच्छा हो, यदि सभी भारतीय भाषाएँ एक लिपि अपनाएँ जो वर्तमान विभिन्न लिपियों को मिल-जुल रुप विभिन्न लिपियों को मिला-जुला रुप हो पर सबसे महत्वपूर्ण कदम होगा दक्षिण की चार भाषाओं को उत्तर भारत में मान्यता साथ ही हिन्दी के पठ्यक्रम में दूसरी उत्पन्न भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाएँ जोडी जाएँ तकि छात्र इन भाषाओं की निकटता से-परिचित हो। वे भाषाएँ भी ऐसी ही नीति अपनएँ।

भारत को अपने व्यापक पिछडेपन से यदि कभी उबरता है विभिन्न वर्ग की घोर असमानता यदि कभी कम करती है तो जरुरी होगा कि हम एक आम आदमी को उसी की भाषा में शिक्षा और शासन दे , जैसा कि हर विकसित देश में होता है । भारत में ऐसे जानकारि हर गली-मुक्कड पर निलते है जो अंग्रेजी को प्रगति का पर्याय माने, कोई उन्हें झकझोरे और बताए कि उन्नति का क्षेत्र अलग भाषा नही । वह ज्ञान है । जिसे अंग्रेजी से उदित जपाना, कोरिया और चीना जैसे देश जन-सामन्य तक पहुँचाते है, उसका विकास करते है और अपना विकास करते है ।

भारतीय भाषाओं को दो भागों में बांटा जाता है । उत्तर और मध्य भारत की भाषाएँ सीधे संस्कृत पर आधारित है । दक्षिण की चार भाषाओं का मूल भिन्न है पर उन पर भी संस्कृत का यथेष्ट प्रभाव है ।

उत्तर भारत की शिक्षा नितांत आवश्यक है । जैसे हर मध्यामिक स्कूल में छठी कक्षा मे एक दक्षिण भारतीय भाषा पढाने की व्यवस्था हो । एसा होने पर उत्तर-शिक्षण का भाषा वैमनस्य जाता रहेग, सहज ही हिन्दी को दक्षिण भारत में स्वीकृत मिलेंगी ।

उत्तर भारत की दुसरी भाषाओं के प्रति हिन्दी को विशाल हृदय भी होता होगा । बंगाली, गुजरती, उडिया, आदि के शीर्षक साहित्यकारों की रचनाएँ हिन्दी पठ्व क्रम में जोडी जाएँ, इससे छात्रों पर अतिशय भार न पडेगा । इन हिंदीतर भाषाओं के अनेक पध्यों की भाषा हिन्दी की खडी बोली से लगभग उतनी ही दूर है जितनी रामचरित मानस की अवधी । "वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, जे पीड परयी जानें रे" का अर्थ समझने केलिए किस हिन्दी भाषा कों कुंजी उठानी होगी? संस्कृत गर्भित होने पर यह दूरी और भी कम हो जाती है जैसा कि 'जन गण मन' और 'वंदे मातरम' जैसी रचनाओं में देखा जा सकता है । गध्य पठन भी मुश्किल न होगा । "शांतता कोर्ट चालू आहे" का अर्थ एक बार जान लेने पर क्या किसी उत्तर भारतीय केलिए याद रखना कठिन है ।

देश में आज भी दूसरी भारतीय भाषाओं की कुछ रचनाएँ पढाई जाती है-पर अंग्रेजी के माध्यम से इस पर कुछ कहने से पहले हम 'अंग्रेजी की महत्ता के बडे विषय को लें ।

निस्संदेह वैज्ञानिक, प्राध्योगिक, व्यवसायिक आदि क्षेत्रों मे नई खोजो, नए विचारों की भाषा प्रावः अंग्रेजी होती है । सबसे उन्नत देश अमेरिका की भाषा अंग्रेजी है । ज्ञान-विज्ञान की जितनी पुस्तकें, पत्रिकाएँ अंग्रेजी में उपलब्ध है उतनी किसी और भाषा में नही।

उच्च शिक्षा केलिए जितने छात्र भारत से प्रतिवर्ष अमेरिका जाते है, लगभग उतने ही ताईवान, दक्षिण कोरिया जैसे देशों से जहाँ विश्वविद्यालयों में विज्ञान तथा तकनीकी विषय भी चीनी, कोरिया जैसी भाषाओं में पढाए जाते है । पाँच सदी पूर्व की अंग्रेजी की तुलना मे हमारी भाषाओं की वर्तमान स्थिति श्रेयस्कर है । संस्कृत की विपुल शब्द संपद हमारी पाती है । अगर कमी है तो केवल इच्छाशक्ति की, एक संकल्प की अपनी भाषा कि राग-द्वेश को मिटाकर आगे बढने की।

आज देश में जो भी प्रगती हो रही है उसका लग-भग प्राय: उच्च मध्यवर्गीय २० करोड लोगों तक सीमित है । शेष ८० प्रति- शत के पास अपना जीवन विस्तार सुधार के बहुत कम रास्ते है, जिसका एक कारण अंग्रेजी की प्रभुसत्ता है ।

यदि हम को कभी उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाना है तो जरुरी है कि हम अंग्रेजी की बेडियों से मुक्त हों । उसे एक अतिथि सा सम्मान दें । गुहस्वमिनी न माने । आम आदमी को उसी की भाषा में शिक्षा और शासन दिया जाया ।

हम अन्य देशों से सीखें आज चीन जिस तरह दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है, इसी तरह हम भी किए तो आशचर्य नही कि इन शताब्दी के मध्य तक हिन्दी भाषा विश्व में उतनी ही महत्वपूर्ण हो जाय जितनी अंग्रेजी, तब हम और दयनीय न लगेंगें ।

ARM COLLEGE DAVANAGERE

ಎಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗ ಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಸಂಶೋಧನೆಗಳು ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಿ ತವೆ ಎಂಬುವುದು ಕನ್ನಡಿಯಷ್ಟೇ ಸತ್ಯ. ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತರು, ಅರಿವುಳ್ಳವರು, ಬುದ್ಧಜೀವಿ ತಮ್ಮ ವೈಚಾರಿಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿಂದ ಬಡವಾಗುತ್ತಿರುವ ಸಮಾಜದ ಎಲ್ಲಾ ರಂಗಗ ದ್ಧ್ಯಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ವಿಜೃಂಭಿಸಿ ತಟಸ್ಥರಾಗುತ್ತಿರುವ ಈ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಷ್ಟೇ ಪ್ರಧಾನ ತ್ತರವೂ ಉಸಿರಾಗಬೇಕು. ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟ ಬದುಕು ಕಟ್ಟಲ್ಪಡಬೇಕು, ಕೆಡಹುವ ಜನರ ಮ ಟ್ಟುವ ನಾವೂ ಇದ್ದೇವೆ ಎಂಬ ವಿನಮ್ರ ಪ್ರಯತ್ನವಿದು. ಇದು ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು ಸಂಕೀರ್ಣ ನೆಲೆಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಮ್ಮ ಕರುಳ ತುಡಿತದ ಕುರುಹಾಗಿ ನಾವಿದನ್ನು ಈ ನೆಲದ ನೋವಿನ ದಾಖಲೆ ಮಾಡುತ್ತಲೇ ನಲಿವಿನ ಹಾದಿ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದೇವೆ. ಹಾಗೆಂದೇ ಅನನ್ಯವಾದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಡಿ ಹೊಸ ಕಾಣ್ಕೆಯ, ಉತ್ತರದ, ಬಂಧನ ಬಿಡಿಸುವ ಜ್ಞಾನ ಮೀಮಾಂಸೆಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಅಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ಅನುಸಂಧಾನ ಕೈಗೊಂಡಿದ್ದೇವೆ. ನಮ್ಮ ಆಶಯದಂತೆ ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಸಂಲೇಖನಗಳ ಮೂಲಕ ಸಕ್ರಿಯವಾಗಿ ಸ್ಪಂದಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಲೇಖಕರಿಗೂ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

–ಪ್ರಕಾಶಕರು

ISBN
9789384534950

समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना

प्रधान सम्पादक : डॉ० दयानंद सालुंके

विनय प्रकाशन, कानपुर

ISBN : 978-81-89187-51-4

पुस्तक	:	समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना
संपादक	:	डॉ. दयानंद सालुंके
कॉपीराइट	:	संपादकाधीन
प्रकाशक	:	**विनय प्रकाशन** 3ए/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.) सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903 vinayprakashankanpur@gmail.com www.vinayprakashan.com
संस्करण	:	प्रथम, 2017
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर
जिल्दसाज	:	तबारकअली, कानपुर
मूल्य	:	500.00 रुपये

Samkaleen Hindi Sahitya Me Nari Samwedana

Edited By : Dr. Dayanand Salunke

Price : Rs. Five Hundred Only.

अर्पण

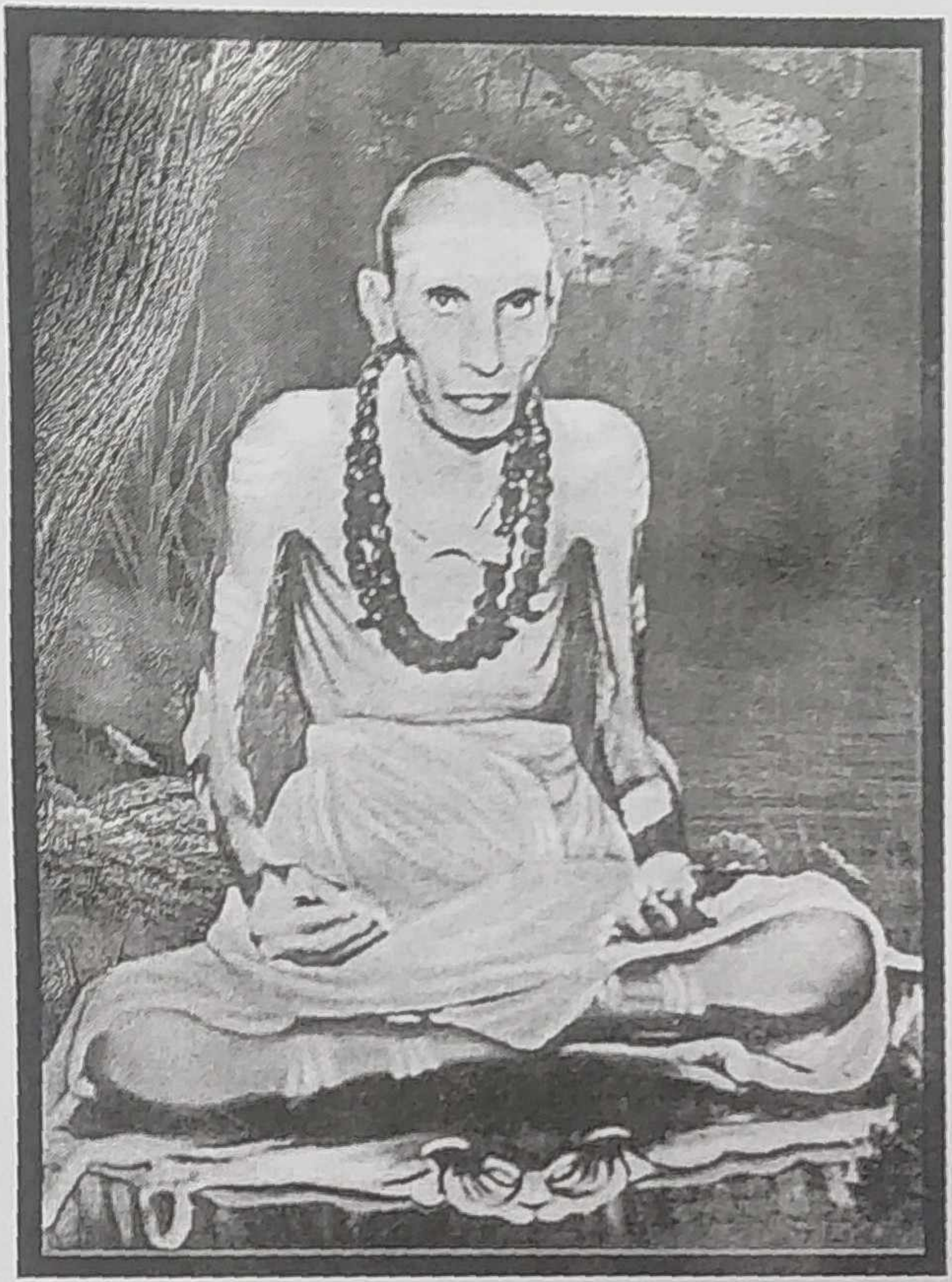

श्री लिंगैक्य, मरीशांतवीर महास्वामी जी

के

चरणों में सादर....

26. समकालीन स्त्री विमर्श 137 - 141
डॉ. किरन बी. कामाजी
27. हिन्दी साहित्य में नारी का पात्र 142 - 148
डॉ. वेंकट नाईक
28. समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना–
सुधा ओम ढींगरा के संदर्भ में 149 - 152
डा. सुजाता पी. फातरपेखर
29. 'छिन्नमस्ता' में नारी चेतना 153 - 156
श्रीमती हमीमा ओ. पी.
30. समकालीन कथा साहित्य में नारी संवेदना
ममता कालिया की कहानी 157 - 161
श्रीमती लता कुलकर्णी
31. डॉ. सवितासिंह के काव्य साहित्य में नारी संवेदना 162 - 165
डॉ. मधुमालती जी. एस.
32. समकालीन कथा साहित्य में नारी की संवेदना 166 - 168
सरिता देवी
33. समकालीन लेखिका प्रभा खेतान का उपन्यास
साहित्य और स्त्री स्वाभिमान की संघर्ष–गाथा 169 - 173
सरोज बैरड
34. समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी संवेदना 174 - 177
एस. विजय कुमार
35. राजी सेठ की कहानियों में नारी का सचेतन रूप 178 - 181
डॉ. सुगंधा हिंदुराव घरपंकर
36. समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी संवेदना 182 - 184
मोहम्मद महमूद
37. समकालीन हिन्दी कहानियों में दलित नारी चेतना 185 - 188
एन. वंशी कृष्णा
38. समकालीन कथा साहित्य में नारी संवेदना 189 - 196
डॉ. नागराज एन शेट
39. समकालीन उपन्यासों में चित्रित नारी–जीवन 197 - 201
डॉ. (श्रीमती) रजियाबेगम एफ्. शेख
40. समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में नारी संघर्ष 202 - 205
श्री एस. ए. पाटील
41. आधुनिक अहिल्या–कहानी में अभिव्यक्त नारी संवेदना 206 - 208
डॉ. श्रीमती नलिनी डी. कुलकर्णी
42. समकालीन हिंदी साहित्य में लेखिकाओं की
नारी–शिक्षा संबंधी संवेदना 209 - 211
डॉ. एच. आर. घरपंकर
43. समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में नारी संघर्ष 212 - 215
प्रो. जि. आर. सर्वमंगला
44. कात्यायनी की संवेदनात्मक कविता का आत्मसंघर्ष 216 - 219
डॉ. गुरुदत्ता
45. हिन्दी उपन्यास 'कठगुलाब' में नारी संवेदना 220 - 223
डॉ. रमेश बाबु गट्ला
46. आधुनिक हिन्दी कहानियों में नारी संवेदना 224 - 226
के. स्रवंती
47. समकालीन आत्मकथाओं में नैतिक मूल्यों
की प्रतिष्ठा का आग्रह 227 - 231
के सुवर्णा
48. समकालीन साहित्य में नारी विमर्श 232 - 234
विजया चांदावत
49. भूमंडलीय और नैतिक मूल्य 235 - 238
डॉ. मंजुला एस. चौहान
50. भूमण्डलीकरण और नारी 239 - 242
डॉ. शीला भास्कर
51. 'मित्रो मरजानी' में स्त्री विमर्श की तलाश 243 - 246
डॉ. संगीता के.

31

डॉ. सवितासिंह के काव्य साहित्य में नारी संवेदना

डॉ. मधुमालती जी. एस.

मोगल साम्राट सुप्रसिद्ध शेरशाह सूरी का राजधानी के 'पटना' का 'बिहार' के कस्बानुमा शहर 'आरा' में ५ फरवरी १९६२ को 'श्रीराम प्रताप सिंह' और 'देवी लालपरी' के द्वितीय पुत्री के रूप में जन्म लिए। भारत में आधुनिकता का विमर्श पर पी.एच.डी. दिल्ली विश्वविद्यालय में अद्यपन का आरम्भ सेंट स्टीफेंस कॉलेज से शुरू लिए। दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र में एम. ए. और एम. फिल. किए और उच्च शिक्षा 'मैकगिल विश्वविद्यालय' मांट्रियाल में किए है। २००१ में इग्नों में 'स्कूल ऑफ जंडर अंड डेवलपमेंट स्टडी' में डैरेक्टर बनके IGNOU में काम रही है।

बिहार के कस्बानुमा शहर 'आरा' में जन्मी सवितासिंह हिन्दी साहित्य के प्रति रूचि जगाने का श्रेय अपने चाचाजी को देती है। साहित्यकार अपने सामाजिक जीवन में घटने वाली घटनाओं को काल्पनिक रूप से साहित्य का रूप देते है। जब भी समाज में अन्याय, अत्यचार एवं गैर कानून का प्रभाव दिखाई देता है, तो तुरन्त साहित्यकार अपनी कलम द्वारा उसका विरोध करता है। साहित्यकार एक नए युग का सृष्टा होता है की उस नये युग का सृष्टा का अपना ही एक दृष्टिकोण रहता है, सविताजी की रचना में करुणा की अधिकता है। इससे हमें मालूम होता है कि सामाजिक विसंगतियों ने जिन्हें वह जाने को बाधा कर दिया, उन्हीं के सतत संघर्ष को उकेरेने का प्रयत्न किया है। उसने लड़ाई लड़ी भी है।

एक सुबुद्ध स्त्री जब अपने लिंग के प्रति सचेत होकर सामाजिक संबंधों के ढाँचों की पडताल करने बैठती है, तब स्त्री होने के संकट का बोध लेखिका और पाठकों को एक जैसा होता है। सविता जी की कविताएँ उसी संकट और उससे उन्मुक्ता के अहसास को एक साथ पैदा करती है। स्त्री संस्कृति का प्रतीक है, मानव सभ्यता के विकास भी धुरी, लेकिन अपने जीवन के नई चुनाव का अधिकार हमेशा उससे परे ही रहा है। तथा शुदा भूमिकाओं मे जिते जी अब वह खुद को पाने के लिए उत्कुंठित है। स्त्री के लिए 'स्व' को परिभाषित कर पाने की सबसे बड़ी बाधा उसके सांस्कृतिक प्रतीक ही है। उसकी सहिष्णुता पृथ्वी की

तरह विराट है। पृथ्वी की ही समतल और हरित दिखने पर भी उसके भीतर धधकता लावा है। अपना यह रूप वह सबसे छिपाते रही, खुद को ही झुठलाती रही लेकिन अब वह अबोध मुक्ति चाहती है, उल्लासमय वेगवती हवाओं की तरह भरपूर बहना चाहती है।

सविताजी अपने काव्य संग्रह, 'अपने जैसा जीवन' स्त्री स्वतंत्रता के विचार से विकासित हुए है। इनमें सविताजी की कविताओं की धारा शोषण और यातना भरे चहरों की मायूसी नहीं बल्कि सदियों से पीठ पर नीले दाग झेलती स्त्री के मन में नई हवाओं का संगीत है। सवितासिंह का स्त्री विमर्श 'अस्विकार' और 'आत्मसजगता' के दोहरे अहसास से पैदा होता है। 'अपने जैसा जीवन' संग्रह के 'गति' में

"क्या होता है दुःख का भी कोई रंग
पीला उदास
थकी रात में जैसे थका चाँद
क्या दुःख की होती है कोई गति"

अरमानों का चूर–चूर हो जाने पर बढ़ने वाली नारी घुटन यहाँ प्रस्तुत की गई है। उदासीजन्य स्थिति में उभरी घुटन को यह व्यक्त किया गया है। इस नारी को दुःख के सिवाय कुछ नहीं मिला, खिलखिलाती रोशनी में जीना चाहती है, अपने टूटे हुए अरमानों, सपनों आदि संबंधी नारी के विचार किया है। अपने अकेलेपन की पीड़ा से निर्मित उदासी के कारण यहाँ नारी की घुटन पता चलता है।

"इस दुधिया रात में
आखिर है उदास करने वाली
चाँद सी पीली एक लौभी"

'सोचा न था' कविता में प्रस्तुत अंश में नारी की संवेदना से उत्पन्न पीड़ा के अनेक पहलूओं पर कवियत्रि ने यशस्वी रूप में चिंतन किया है। इर्द–गिर्द भी घटनाएँ संयुक्त परिवार से उत्पन्न पीडाएँ, प्रियतम द्वारा सुख एवं अरमानों की होने वाली विडंबनाएँ, अकेलेपन की, सत्य–असत्य के बीच की संघर्ष की स्थितियाँ, नारी मन को अबुद्ध करने वाले बंधनों की पीडाएँ, शरीर की अपेक्षा मन पर पड़े घावों की विदविग्दताएँ नारी की संवेदना बढ़ती है और वह इससे पीड़ित बनकर एक उदासिजन्य अंधकाराजन्य दुनिया में धकेली जाती हैं।

"कोई एक डाल किसी मजबूत पेड की
तेज तूफान में गिरकर भी बची रहती है
हल्की सी अपने तने से यदि
वह है अब भी लगी"

'सपने की औरत' कविता में नारी संवेदना को उजागर करने वाली हैं। यह व्यथा एक नारी की न होकर समस्त नारी जाति की लगती है। सविताजी ने

नारी का बचपन, उसके माता–पिता का, उसके पति का दृष्टिकोण, उसका यौवन, उसकी शादी आदि के बाद उसका पराये घर में प्रवेश वहाँ के लोगों द्वारा उसे मिलने वाली उपेक्षा इससे उसके मन में उत्पन्न उदासी, खालीपन, अखेलेपन, कई पराये घर में हर जगह नारी द्वारा किया जाने वाला समझौता आदि अनेक स्थलों पर कवियत्री ने नारी संवेदनशीलता का परिचय दिया है।

"डूबती है कई
कई गल भी जाती है बीच में ही
कुछ लगती है पार
खतरनाक इस गहरे जलाशयों के "

'अवसाद में कविता' इस कविता में सविताजी नारी मन की संवेदनशीलता को हिला देती है। स्पष्ट होता है कि अपनी परंपरा के अनुरूप नारी मन को कुचला दिया जाता है, वह दीवार पर टंगा चित्र बनता है। उसके साथ खिल्वाड किया जाता है। उसे बोझ माना जाता है। कवयत्री चाहते है कि इससे भी परे उसका जीवन है, उसका आनंद है। हम उसे भोगने नहीं देते है। उसे मुक्त करने की आवश्यकता है।

"लिखूँ भी तो क्या लिखूँ
उतरता जा रहा है सब कुछ
भाषा के उस पार के विस्तार में
छनकर जहाँ नहीं पहुँचता मेरा यह संसार।
लिखने से नहीं लिखा जा सकता"

'अवसाद में कविता' सविताजी कहती है दीन, अनाथ, पंगु, बच्चें, माँ–बच्चे के प्रेम से परे बच्चे, अभावग्रस्त बच्चे, आदि के प्रति संवेदन प्रकट की है। नारी विचार करती है की उन बच्चों का कौन भविष्य बना पायेगा इसके लिए कोई कुछ कर सकेगा, भीख की कतार में खाडे इन बेटियों के लिए दीन–हीन बच्चों का जीवन देखकर कवियत्री भविष्य के प्रति चिंता प्रगतिवादी विचारधारा की द्योतक के रूप में प्रकटित होते हुए दीख पड़ती है।

"समय के गर्भ में छिपा जीवन और इतिहास
त्रासदी सुख और विस्मय का मिश्रण
जैसे समझ लिया गया हो आने वाला दौर
विपद गाथाओं का"

'पुराना संदूक' कविता में से कवियत्री मुख्य अंश पर नजर डाला है। इससे ज्ञात होता है की यहाँ नारी के विचारों में संवेदनशील के दर्शन होते है। अनजान व्यक्ति के साथ नारी का विवाह हो जाना, बच्चों को जन्म देना, उसका भरण पोषण करना, उसके भविष्य के प्रतीक सोचना, आदि के कारण विविध

पहलुओं के दर्शन होते है। दीन–हीन, अनाथ अभाव ग्रस्त बच्चों का जीवन देखकर कवियत्री संवेदन प्रकट करती है।

उपसंहार

सविताजी अपने साहित्य में यथार्थ रूप में नारी जीवन को रेखांकित किया है। सविताजी ने नारी की घुटन शीलता, टूटनशीलता, संवेदनशीलता, स्वतंत्र अस्तित्व की धारणा आदि का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही यह बताने का प्रयास करती है की सही अर्थ में नारी स्वतंत्र नहीं है। वह चेतना है। जो अपने काल या समय से संबंध हो और सामाजिक संदर्भों दबाओं और तकाजों को स्वीकार करती हुई काव्य को ताजगी व नवीनता प्रधान करने में समर्थ हो यह समकालीनता अर्थात युगीन प्रवृत्ति हर युग में अलग–अलग रूपों में दिखती है। अतः इसका विकास युगीन समस्याओं और चुनौतियों के केंद्र में देखते हुए समकालीन हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर सविताजी का काव्यात्मक योगदान जो राजनीतिक और सामाजिक चेतना के रूप में मिला है। इनकी रचनाओं में वह न समाप्त होने वाली तथा नया कुछ करने वाली छट–पटाहट तथा बचैनी है जो काव्य के स्त्रोतों को निर्भर प्रवाहित रखने में सक्षम है।

संदर्भ सूची

१. "अपने जैसा जीवन" डॉ. सविता सिंह, गति
२. "अपने जैसा जीवन" डॉ. सविता सिंह, सोचा न था।
३. "अपने जैसा जीवन" डॉ. सविता सिंह, सपने की औरत।
४. "अपने जैसा जीवन" डॉ. सविता सिंह, अवसाद में कविता।
५. "अपने जैसा जीवन" डॉ. सविता सिंह, पुराना संदूक।

DR. MADHUMALATI. G. S.
Assistant Professor & HOD in Hindi,
A. R. M First Grade College,
S.Nijalingappa Layout, Davangere.
e-mail : meetmalatigs1@gmail.com

ISBN 978-81-89187-51-4
9 788189 187514 >

विनय प्रकाशन, कानपुर
सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903

MFTRA IS REGD. TRUST

सत्यमेव जयते

ESTD. 1973

Mahatma Fule Talent Research Academy

महात्मा फुले प्रतिभा संशोधन अकादमी

लोक एकाय!

Estd. 1973

Founder : Dr. C. B. BHOYAR

"A MISSION FOR HUMANIST GLOBAL INDIA"

AND DR. Madhumalati

Bhagyalaxmi Health & Education Society, Nagpur

SAFAL DIET & PHYSIOTHERAPY CENTER, NAGPUR

Jointly Organises

26th International Interdisciplinary Conference On "Growing Need & Social Awareness On Human Organ Donation (IICGNSAHOD)

THE

NIRMIK

HALF YEARLY INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL OF
Mahatma Fule Talent Research Academy

ISSN 2320-2033

ISSUE - 14th, Vol. 14

5th March 2017

अनुक्रमणिका

No.	Title
१.	मोल अवयवदानाच -सर, डॉ. विद्यासागर चंद्रभान भोयर
२.	दानामध्ये श्रेष्ठ दान मरणोत्तर नेत्रदान-मधुकर धंदरे
३.	अवयवदान करा आणि नवजीवन द्या
४.	मृत्यूनंतर आपल्या अवयवांचं दान-डॉ. एस.जे.आचार्य
५.	मेंदू मृत्य व हृदय प्रत्यारोपन-डॉ. रविशेखर धकाते,
६.	अवयवदानाला 'अच्छे दिन'- मुस्तफा आतार
७.	अवयवदान श्रेष्ठदान- डॉ. विजय सुरासे,
८.	अवयवदान हेच श्रेष्ठ दान - काव्यशिरोमणी डॉ. वसंत वि. राऊत,
९.	देह के विविध अंगों का दान देते हुए लोगों में जागृति पैदा करना - डॉ. मधुमालती जी.एस.
१०.	रक्तदान : काळाची एक गरज - डॉ. गणेश खंडेलवाल,
११.	नेत्रदान-डॉ. अनिल भोंडे,
१२.	देहदान - डॉ. दुवी सत्यलथा,
१३.	मरणोत्तर अवयवदान - डॉ. राम गावंडे
१४.	'की.....किडनीची' - श्री. पाटकर
१५.	मूत्रपिंड निष्क्रियता -डॉ. भरत व्ही. शाह
१६.	मधुमेह आणि आहार-डॉ. चंद्रशेखर गिल्लुरकर
१७.	ताकि बनी रहे आंखों की ज्योति-डॉ.एस.के. जैथलिया
१८.	क्या आप ब्लड प्रेशर दर्शाने वाले अंकों का मतलब जानते हैं? -प्राचार्य डॉ. वंदना बेंजामिन
१९.	आहार पद्धतीमुळे ७० टक्के भारतीयांना अनियंत्रित मधुमेह- डॉ. वर्षा खुराना
२०.	हृदयरोग टाळणं आता शक्य-डॉ. आशीष गणेश खंडेलवाल
२१	किडनी के दुश्मन मधुमेह और उच्च रक्तचाप- डॉ. भास्कर शर्मा
२२.	एड्स व त्यावरील औषधोपचार- डॉ. अविनाश केवटे
२३.	फिलैरियासिस-डॉ. प्रदीप शर्मा

IISN No. 2320-2033

देह के विविध अंगों का दान देते हुए लोगों में जागृति पैदा करना

-डॉ. मधुमालती जी.एस.
असि. प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग, एआरएम फर्स्ट ग्रेड कॉलेज,
एसएन लेआउट, दवांगेरे, कर्नाटक
ई मेल-meetmalatigs1@gmail.com

माता-पिता संतान को जन्म देते हैं ताकि मरने के बाद भी जीवित रह सके. जीवन का मोह ही ऐसा है कि कोई मरना नहीं चाहता. गरीब हो, रोगी हो, बुजुर्ग हो, कोई मरना नहीं चाहता. इसके लिए ८५ लाख योनियों में प्रवेश करने को भी तैयार है.

मनुष्य जब तक जीवन बिताता है तब तक हर क्षण, हर पल, हर दिन अपने आप को किसी न किसी काम में लगा लेता है. वह भी अपने लिए नहीं अपने लोगों के लिए अपने सर्वस्व को अर्पित करके काम करता है. मगर मरने के बाद वह एक निरुपयुक्त वस्तु की तरह मिट्टी में मिट्टी होकर नाश हो जाता है. इसके बदले जिंदा रहते समय में ही दूसरों को बचाने के लिए अपने अंगों को दान करने से अंगों की न्यूनता से तड़पने वालों को सहायता करने से और एक के रूप में अच्छी खासी जिंदगी बिता पाता है.

हम मरने के बाद निष्प्रयोजक वस्तु बन जाते हैं. इसके बदले जीवित रहते समय ही कुछ अच्छा काम करके मरना बहुत ही अच्छी बात है. सभी एक न एक दिन मर जाते हैं. मगर मरने वालों की भावना अलग होती है. जैसे कि कुछ लोग जीवित रहते समय दान-धर्म करते हैं. कुछ लोग मरते समय अपने अंगों का दान देने के लिए दृढ़ निर्णय लेते हैं. जैसे कि अपने से काबिल मानने वाले, ह्दय, आंख, ब्रेन, किडनी आदि. यह भावना कुछ ही लोगों में है. मगर सभी के मन में जागृत करने का काम करना आवश्यक है. ऐसा करने से आने वाले दिनों में किसी भी तरह का बदलाव ला सकते हैं.ऐसा कहना आसान है मगर करना बहुत ही मुश्किल है. क्योंकि मृत्यु के बारे में कोई भी हो सोचना अशुभ मानते हैं.

मनुष्य जब तक जिंदा रहता है तब तक मात्र मनुष्य कहलाता है. अर्थात उसके शरीर में जब तक सांस चलती रहती है. जब सांस रुक जाती है, उसी क्षण वह जड़ या निर्जीव वस्तु बन जाता है.

अनुभवी लोगों का कहना है-
तुम में जब तक सांस चलती है
तुम तब तक जीव कहलाते हो
तुम में जब सांस रुक जाती है
तुम एक जड़ वस्तु हो।

इस बात के अनुसार मनुष्य की जिंदगी का एक अंत रहता है. इस जीवन और मरण के बीच में जो वह दान-धर्म करता है, वही उनके रहने का संकेत बन जाता है. मनुष्य की मृत्यु हो जाने के बाद वह जर्जर हो जाता है. उससे बेहतर यही है कि दृढ़ फैसले के साथ अपने अंगों का दान करने के बारे में सोचना अच्छी बात है. दान देने का मतलब है मृत्यु के बाद देने वाली वस्तुओं के बारे में सोचते हुए लोग घबराते हैं. भय का अनुभव करते हैं. फिर भी इसके लिए मन की दृढ़ता की आवश्यकता है. मृत्यु हर किसी को एक न एक समय अवश्य आती है. क्योंकि जनन अनिवार्य है, मृत्यु निश्चित है. हर एक को मृत्यु कहे तो भय में पड़ जाते हैं. इसीलिए आगे कभी होने वाली मृत्यु के बारे में आज क्यों सोचना चाहिए? अभी जिंदगी बहुत ही बड़ी है. करने के लिए काम बहुत पड़े हैं. पहले सभी अनुभवों को अपनाना हमारा काम है, सोच के अच्छे कामों को हम भूल जाते हैं.

अपने अंगों का दान किए हुए लोगों का कई उदाहरण हमें मिल रहे हैं. जैसे कि कर्नाटक के सुपरस्टार डॉ. राजकुमार ने अपनी दोनों आंखें दान की जिससे दो अंधों की जिंदगी सुधर गई. चेन्नई की एक औरत का स्वास्थ्य ठीक नहीं था. उसके माता-पिता ने बेंगलुरु में रहने वाले एक आदमी की हृदय की जरूरत को जानकर मरती हुई उस औरत के हृदय को दान दे दिया. बेंगलुरु में हरीश नामक व्यक्ति की दुर्घटना में उसकी देह दो हिस्सों में कट गई थी. (८/३/२०१६) में इस समय वह मर रहा है. मगर उस समय उसने एक ऐसा निर्णय लिया कि अब तो मैं नहीं बच सकता हूं मगर मेरा अंगदान करने से दूसरों को बचाया जा सकता है. सोचकर उसी क्षण उन्होंने जो काबिल है उन सभी को दान करने को कह दिया. ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय को एक साधारण व्यक्ति ने लिया तो प्रधानमंत्री ने हरीश सांत्वना योजना को जारी किया और इस योजना के अधीन कोई एक्सीडेंट होने पर उस व्यक्ति को पच्चीस हजार तक मुफ्त चिकित्सा दी जाती है. मार्च महीने में हमारे एक परिचित सेवानिवृत्त टैक्स अफसर यात्रा के लिए गए थे उस समय उनको दिल का दौरा पड़ा और नेपाल में उनकी मृत्यु हो गई. जब उन्हें यहां लाया (बेल्लारी) तो उनको अस्पताल के लोग लेकर गए. इसका मतलब है उन्होंने अपनी पूरी देह को बेंगलुरु के अस्पताल को दान कर दिया था. उसके बारे में पूरे परिवार में किसी को भी पता नहीं है.

IISN No. 2320-2033

शरीर के अंगों को दान करने से दूसरे जीव की रक्षा हो जाती है. अंगों का दान करने का काम महत्तर साधन है, क्योंकि जब आदमी इस दुनिया को छोड़कर नश्वर दुनिया में जाता है उससे तो कुछ लाभ नहीं है. उसके बदले में अगर अपने स्वस्थ अंगों को दान किया तो दूसरे रोगी के स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं. अब तक तो हम मरे हुए लोगों के दान के बारे में जान गए, मगर हमारे बहुत से सेलिब्रिटीज अपने अंगों को दान देते हुए दूसरों को भी मार्गदर्शक और प्रोत्साहनकारी बन गए हैं. वे लोग ऐसे हैं, हमारे हिंदी फिल्म की अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने अपनी आंखें, ऐश्वर्या राय बच्चन ने अपनी दोनों आंखें, अमिताभ बच्चन ने अपनी आंखें, जया बच्चन ने आंखें, माधवन ने अपनी आंखें, श्वासकोश, हृदय, किडनी, हड्डी, नंदिता दास ने अपने देह के प्रमुख अंगों को, आमिर खान ने अपने प्रमुख अंगों को, किरण राव ने अपने प्रमुख अंगों को, सलमान खान ने अपने सभी प्रमुख अंगों को, फराह खान, रानी मुखर्जी ने अपने प्रमुख अंगों को दान के रूप में लिख दिया है और हमारे क्रिकेटरों जैसे- अनिल कुंबले, सिद्धु, गौतम गंभीर, कपिल देव सभी ने अपने प्रमुख अंगों को दान के रूप में लिखकर देते हुए सभी के मार्गदर्शक बन गए हैं.

....

NKP Salve Institute of Medical Sciences & R C
Lata Mangeshkar Hospital

Digdoh Hills, Hingna Road, Nagpur. Ph. (07104) 306100, Fax : (07104) 232905
Email : nkpsims1@rediffmail.com

Shri Ranjeet Deshmukh
Chairman
VSPM AHE, Nagpur

Centre for excellence in UG & PG
All Medical Courses recognized by MUHS & MCI
150 Undergraduate Seats
80 Postgraduate seats in all Specialities

One point destination for affordable medical care in all specialities under one roof.

Shri Ashish Deshmukh
Treasurer
VSPM AHE, Nagpur

Facility Available

- 24x7 Casualty & Emergency OT.
- 1000 General Beds with 125 specialised care beds.
- All specialities with eminent team of Doctors.
- State-of-art Diagnostic facilities including centralised
- automation lab.
- Endoscopy, MRI, CT Scan, Mammography,
- Dialysis Unit, Burn Unit, Hormone Estimation, 2D Echo,
- Doppler, DSA, EEG, EMG, USG, Laparoscopy.
- 24 hrs Blood Bank & Component Lab.
- 14 Operation theaters for all type of major surgeries.
- Critical Care facilities with Ventilators, Monitors,
- Infusion Pumps etc.
- Eye Bank & Cornea Transplant Unit.

Shri Amol Deshmukh
Secretary
VSPM AHE, Nagpur

- **VSPM Dental College (with 300 Chairs)**
- **VSPM College of Physiotherapy**
- **VSPM College of Nursing (BSc.)**

Madhuribai Deshmukh Institute of Nursing Education

यु.जी.सी. द्वारा आयोजित द्वि–दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग

विविध विधाओं के संदर्भ में

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

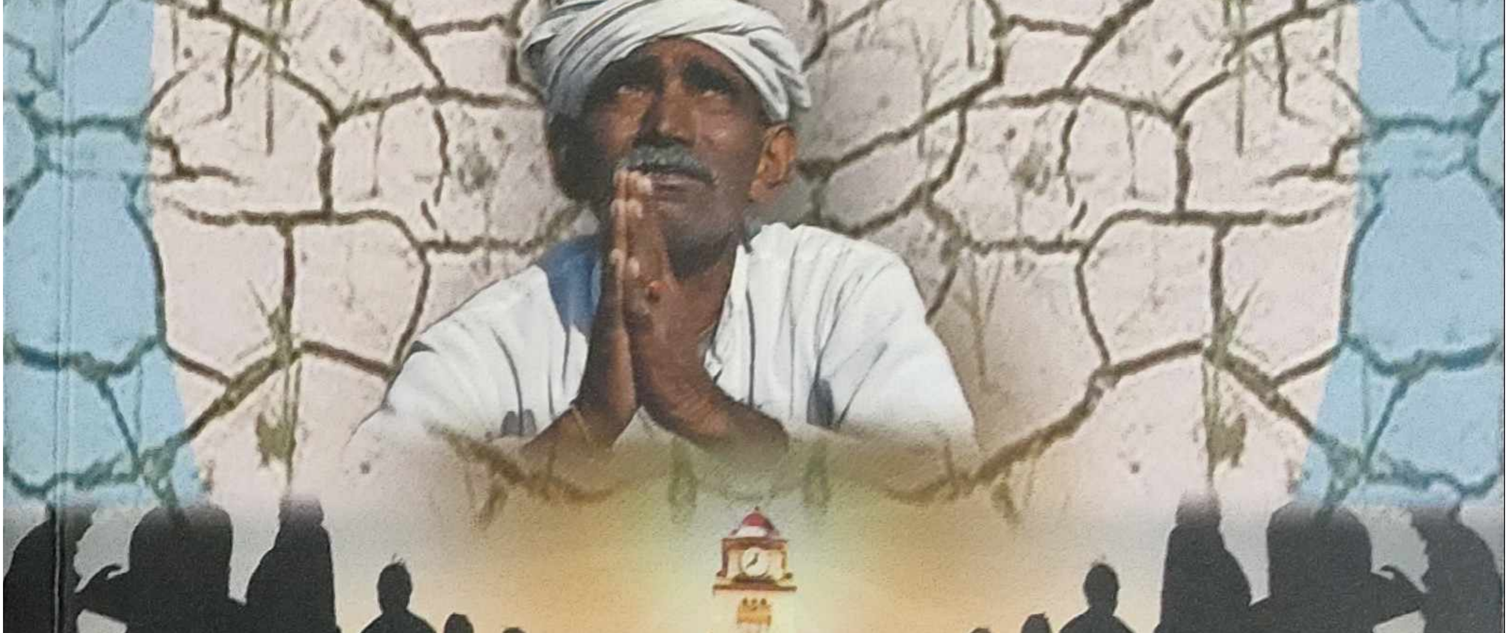

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

विभागाध्यक्ष एवं निदेशक,
हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

डॉ. एल. पी. लमाणी

इन्टरनैशनल पब्लिकेशन

कानपुर (उ.प्र)

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"

(Collective Essays Presented at International Conference on **"FARMERS AND LABOURS STRUGGLES IN THE CONTEMPORARY HINDI LITERATURE"**)

प्रधान संपादक - प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : इन्टरनैशनल पब्लिकेशन, कानपुर (उ.प्र)

मुद्रक : श्री रेणुका प्रेस, लाईन बजार, धारवाड.

वर्ष : 2017

पृष्ठ : 667+VIII

ISBN : 978-81-928158-6-2

मूल्य : **₹ 850/-**

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगे ही ऐसा नहीं है ।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

103	श्रमिक जीवन की त्रासदी: "आवाज़ अंधेरे की" की संदर्भ में	डॉ.नागरत्ना एन.राव & तस्लीमा	349
104	समकालीन नाटकों में श्रमिक वर्ग डा. कुसुम कुमार का नाटक	श्रीमती लता कुलकर्णी	352
105	राजेश जोशी की कविताओं में श्रमिक वर्ग	लता.बी.	354
106	समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. ममता एच. शिरगंबी	357
107	'नीला अकाश उपन्यास में श्रमिक एवं मजदूर वर्ग'	मंजुनाथ बालनायक	359
108	पनाह के आग़ोश में सपने तराशती श्रमिक महिलाओं की शिनाख़्त तिनका तिनका तिहाड़	भरत	362
109	समकालीन कथा साहित्य में ग्राम जीवन : कृष्णा सोबती के विशेष संदर्भ में	प्रा. मारूफ मुजावर	365
110	हिंदी उपन्यास में किसान और श्रमिक का जीवन	महबूबअली अ. नदाफ	368
111	समकालीन हिन्दी कविताओं में किसान एवं श्रमिक वर्ग	नदीम ए. शेख	371
112	समकालीन हिंदी के प्रमुख नाटकों में नारी संघर्ष	डॉ. निशा वर्मा	373
113	किसान समस्याओं को नई राह दिखाने वाली कहानी 'अन्नदाता की आत्महत्या'	नीता दौलतकर	377
114	राजेश जोशी के कविता साहित्य में किसान-मजदूरों का अंकन	पद्मश्री.ए.एस.	380
115	शंकर फुणतांबेकर जी के "कटआउट" व्यंग्य संग्रह में किसानऔर श्रमिक	प्रमोद.जी.शिंगे	383
116	समकालीन नाटक कोणार्क में चित्रित श्रमिक वर्ग	डॉ.प्रतिभा जी. येरेकार	386
117	'प्रेमचन्दजी की कथा और उपन्यासों में	Dr. Madhumalati, G.S.	389
118	असग़र वजाहत जी के कथा साहित्य में समकालीन किसान एवं श्रमिकों का चित्रण	श्री.राघवेन्द्र.वी.मिस्किन	392
119	रत्नकुमार सांभरिया के भभुल्या नाटक में चित्रित श्रमिकवर्ग की मजबूरी-भ्रष्टाचार के संदर्भ में	प्रदीप बा. राठोड	394
120	इक्कीसवी सदी के हिन्दी उपन्यासो में बेरोजगारी की समस्या	राधिका	396
121	मज़दूर त्रासदी का जीवन्त दस्तावेज : सावधान! नीचे आग है	राहिना बक्कर	398
122	भारतीय किसान की मूलभूत समस्याएँ	रोहिणी ज. पाटील	400
123	समकालीन हिन्दी काव्य : किसान एवं मजदूर/श्रमिक वर्ग	सन्तोषी	403
124	समकालीन भारतीय साहित्य में किसान एवं श्रमिक वर्ग की समस्याएँ	लालसाब हुस्मान पेंडारी	406
125	किसान त्रासदी के 'हलफनामे'	शहला. के.पी	409

'प्रेमचन्दजी की कथा और उपन्यासों में किसान और मजदूर'

DR.MADHUMALATI .G.S.,

भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहाँ किसानों की संख्या बहुत है । सत्तर प्रतिशत लोगों का उध्योग कृषि आधारित है । गाँवों में स्त्री-पुरुष कृषि कामों में लगे रहते है । किसान को अन्नदाता कह कर गौरव किये है । फिर उसकी हालत तो गंभीर है । सुख-दुख सहनकर बारिश, थंडी, गर्मी सबी काल में उसे काम करना पड़ता है । उसके बारे में सोचनेवाले तो है मगर उसका जीवन एक संकटमय हो चुका है।

भारतवर्ष पर दो व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव रहा है ।, प्रथम गाँधी का दूसरा साहित्यकार प्रेमचंद जी का है । ये दोनों अलग अलग क्षेत्र के सरताज होते हुए भी एक दूसरे से जुडे हुए रहे हैं । गाँधी को यह देश "राष्ट्रपिता" कहता है, तो प्रेमचन्द को "उपन्यास साम्राट" कह कर सम्मानित करता है । गाँधी का महत्व इस देश की राजनीति पर जितना रहा है, उससे अधिक सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवेश पर भी पडता है । "इस अर्थ में प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव से इंकार किया जा सकता है । हिन्दी साहित्य पर प्रेमचन्द का वैसा ही प्रभाव रहा है जिस तरह से उस दौर में गांधी का रहा है । प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को निश्चित दिशा दी है, साहित्य में यह उपाधी पाने वाले प्रेमचन्द अकेले है । एक यही रचनाकार है जो वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखे जा रहे है । कालात्मक चित्रण कर उपन्यास की विशिष्ट यथर्थवादी परंपरा का निर्माण किया है । उनका किसानों से प्रेम और सहानुभूति साफ दिखाई देती है। जब किसान संघर्ष करते हुए हारने के बावजूद जीतते है और सामंतवाद हारता है । उनकी रचनाओं को किसान जीवन का ट्रैजिक महाकाव्य कह सकते है ।

प्रेमचंद के कहानी 'पूस की रात' में किसानो की स्थिति के बारे में पता चलता है । की हलकू की पत्नी का कहना है कि खेती करना छोड क्यों नहीं देते? मुन्नी की बात पर हलकू कोई प्रतिक्रिया न करता है उसी तरह 'गोदान' के होरी भी आर्थिक स्थिति खराब होने के बावजूद खेती करना नहीं छोडता मजदूरी पेट भरने के लिए और खेती समाज में प्रतिष्ठा केलिए, किसानी के साथ मजदूर जुडा हुआ है जिस देश काल की कहानी 'पूस की रात' है वहाँ कहा जाता था-

उत्तम कृषि, मध्यम बान,
अघय चाकरी
भीख निदान"

प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में जीवनानुसार भाषा का प्रयोग हुआ है । हर वर्ग जातियों की सांस्कृतिक जंडे उन की भाषा में निहित होती है । इनके उपन्यास साहित्य में प्रमुख रूप मे किसानों का संघर्ष जमींदारो साहूकारों और पटवारियों से होता है । वे देश की विशाल जनता, खेतिहर देश के श्रमिक और किसानों की महागाथा लिखने वाले भारतीय साहित्यकार रहे हैं । प्रेमचन्द के कई प्रेरक रहे है ।

भारतीय उपन्यास साहित्य में किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण प्रेमचन्द जिस दौर में रचना करते थे उस समय विश्व स्थर पर लू-शून्य और मैक्सिम गोर्की भी लेखनी

चला रहे थे। प्रेमचन्द देश की विशाल जनता, खेतिहर देश के श्रमिक और किसानों की महागाथा लिखनेवाले भारतीय साहित्यकार रहे है।

प्रेमचन्द का कथा साहित्य जितना समकालीन परिस्थितियों पर खरा उतरता है, उतना ही बहुत हद तक आज भी दिखाई देता है। भले ही देश आजाद है पर महिलाओं, दलितों और किसानों की स्थितियों बहुत कुछ वैसा ही अन्याय और शोषण दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गरीब, श्रमिक किसान और स्त्री जिवन का सशक्त चित्रण उनकी दर्जनों कहानियों और उपन्यासओं में हुआ है, 'सद्गति', 'कफन', 'पूस की रात' और 'गोदान' में मिलता है। 'रंगभूमि', 'प्रेमाश्रम' और गोदान के किसान आज भी गावों में देखे जा सकते है। जो वैसे ही ऋणग्रस्त और शोषण का शिकार जिस तरह होरी ताह रहा है। जो गाय जैसी महत्वकांता को साथ लिये हुए इस दुनिया से कुछ कर जाते है। 'सेवासदन' की सुमन की तरह कोठे पर बैटने का सिलसिला आज भी बंद नही हुआ है। 'गबन' उपन्यास का रामनाथ हैसियत से अधिक दिखाने की लालसा में सरकारी धन का घपला करता है। प्रेमचन्द के कथा साहित्य में भारतीय समाज के सभी वर्गों, भारतीय जीवन के सभी पक्षों और भारतीय मनुष्य के सभी रूपों का चित्रण किया है।

प्रेमचन्द की ज्यादातर रचनाएँ उनकी ही गरीबी और दैन्यता की कहानी कहती है। "पूस की रात" कहानी को प्रेमचन्द जी ने चार हिस्सों में बांटा है। बेचारगी के इस बढते बोझ के साथ इस कहानी का पहला हिस्सा खत्म होता है। दरअसल कहानी का पहला हिस्सा इस कहानी की पृष्टभूमी रचता है। हल्कू को हर कदम के साथ अपनी गरीबी, बेचारगी का अहसास होता रहा। क्यों की वह मजदूरी करना नहीं चाहता है मगर किसान होकर जीवन बिताना और प्रतिष्ठा को जताना चाहता है, उनकी पत्नी कहती है तुम खेती करना छोड क्यों नही देते, और 'गोदान' के होरी भी आर्थिक स्थिति खराब होने के बावजूद खेती करना नही छोडता। मजदूरी के साथ-साथ खेती भी करता है। मजदूरी पेट भरने के लिए और खेती समाज में प्रतिष्टा के लिए किसानी के साथ मजदूर जुडा हुआ है। जिस देश-काल की कहानी 'पूस की रात' है, न होरी किसान से मजदूर बनने की प्रक्रिया यातनादायी होती है। किसानी में इज्जत होती है, मजदूरी में नही, और सीमांत किसान की कोटी में आनेवाले होरी की गहरी लालस है, गाय पालने की इस केलिए वह हर संभव उपाय करता है। परिश्रम से लेकर चालकी तक। प्रेमचन्द जी ने अपनी विभिन्न कहानियों में किसान, जीवन के अलग-अलग पहलुओं को रचा है। प्रेमाश्रम रंगभूमि सरीखे उपन्यासों में किसान जीवन के बडे कलफ को उकेरा है।

किसान जीवन पर कथा रचने में प्रेमचन्द जी किसानों के जीवन पर रचे साहित्य के हिसाब से प्रेमचंद दुनिया की किसी भी भाषा के महान लेखकों के साथ शुमार किए जा सकते है। किसानों पर लिखि उनकी कहानियों की तदाद के लिहाज से यह नही कहा जा रहा बल्कि कलात्मकता और गुणवत्ता की वजहन से कहाँ जा रहा है, किसान जीवन के जितने प्रसंगों, आयमों का सजीव चित्रण प्रेमचन्द के यहाँ मिलता है, अन्यत्र दुर्लभ है। किसान जीवन की जटिलताएँ मजबूरिया, त्रासदियाँ, बेचारगी, धूर्तता, चालाकी, पाखंड के साथ-साथ खूबसूरती भी इनकी रचनाओं में जीवंत है। इनके यहाँ किसानों का रागरंग चित्रित हुआ है, पूरे आबों हवा की सच्छाई के साथ है। प्रेमचन्दजी हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक है। उन्होंने हिन्दी कहानी में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की एक नई परंपरा शुरू की। इन्होंने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा। उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा है।

गोदान न सिर्फ भारतीय साहित्य होकर विश्व साहित्य की अमूल्य निधि बना है। 'पूस की रात' से पता चलता है की एक रात में कैसे जीवन को बदल देती है। 'दूध का दाम' मे किसान होते हुए मनोहर भैंस को पालते हुए कैसे मजदूर हुआ है उसका उदाहरण मिलता है। और वह एक ही भैंस को पालते हुए घर को चलाने केलिए और बच्चे के इच्छा को पूरा करने केलिए तरसता है उसका विवरण मिलता है।

'प्रेमाश्रम' किसान जीवन पर लिखा हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास है। यह अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया। 'गोदान' का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके साहित्य संबंधि विचारधारा, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, से आलोचनात्मक यथार्थवाद, तक.की पूर्णता प्राप्त करती है। एक सामान्य किसान को पूरे उपन्यास का नायक बनाना भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देने जैसा है।

ऐसा नही है कि हलकू खेती के साथ मजदूरी नहीं करता था। अगर हलकू मजदूर नही कर रहा होता तो मुन्नी को यह नही कहना पडता कि मजुरी करके लाओ, वह भी खेती में झोंक दो,अ इससे जाहिर होता है कि हलकू किसानी के साथ-साथ मजदूरी करता है।

उपसंहार :

समकालीन हिन्दी कहानी की प्रवृत्तियों, समाज और प्रक्रियाएँ जैसे आम आदमी, मध्यवर्ग कृषक-मजदूर समाज, स्त्री समाज, दलित समाज, आदिवासी एवं अन्य हाशिये का समाज, आप्रावासी समाज, सांप्रदायिकता और अल्पसंख्यक समाज, बाजारवाद और नयी सदी का भारतीय समाज समकालीन हिन्दी कहानी को कला, भाषा और जिन्दगी का यथार्थ आदी पर विचार किया गया है, साहित्य के इतिहास में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान है। आलोचन और विचारधारा की दुनिया के लोगों ने इसे जीवन को समझने की कला और विधा के रूप में लिया है। हिन्दी के प्रसिद्द कथाकार प्रेमचंद कहानी को मानव जीवन का अभिन्न अंग मानते थे। इसलिए जब भी साहित्य के इतिहास पर विचार होता है, उसमे कहानी और उसके इतिहास एवं उसमें अभिव्यक्त मानव जीवन के यथार्थ को बुनियादी तौर पर अलग से समझने की कोशिशे होती रही है। समकालीन समय, समाज परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कहानी की दुनिया रही है। समकालीन कहानी में साफ-साफ देखा जा सकता है, चाहे वे स्त्री चरित्र हो अथवा दलित, किसान अथवा मजदूर।

प्रेमचंद का कथा साहित्य जितना समकालीन परिस्थिति पर खरा उतरता है, उतना ही बहुत हद तक आज भी दिखाई देता है। भले ही देश आजाद है पर महिलाओं, दलितों और किसानो की स्थितियों में बहुत कुछ वैसा ही अन्याय और शोषण दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक किसान और स्त्री जीवन का सशक्त चित्रण उनकी दर्जनों कहानियों और उपन्यासों में हुआ है।

सहायक सूची ग्रंथ:

1) "गोदान" - प्रेमचंद
2) "प्रेमाश्रम" - प्रेमचंद
3) "पूस की रात" - प्रेमचंद
4) "कफन" - प्रेमचंद
5) "देवेंद्रनाथ चौबे" - समकालीन हिन्दी कहानी की दुनिया।

Inclusive Agriculture Growth In India

Chief Editor

Huchhe Gowda

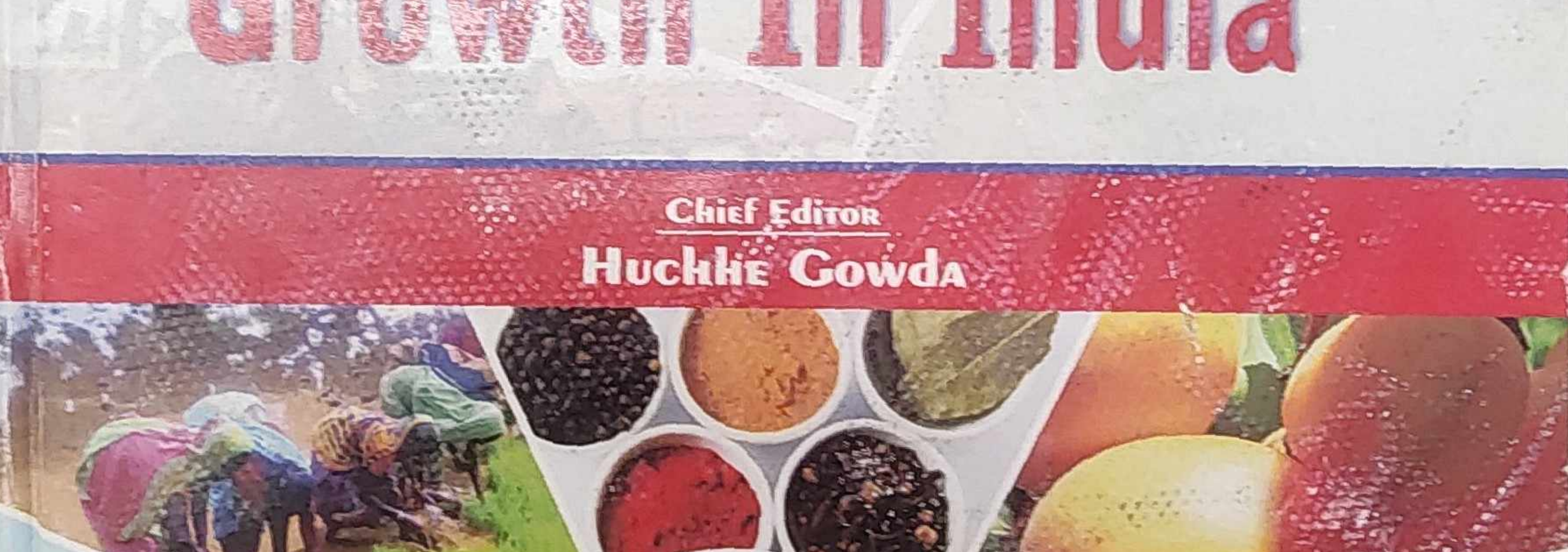

Co-Editors

Talwar Sabanna

M.S.Adi

D.N.Patil

Kiran Kumar

National Bank for Agriculture and Rural Development

NABARD

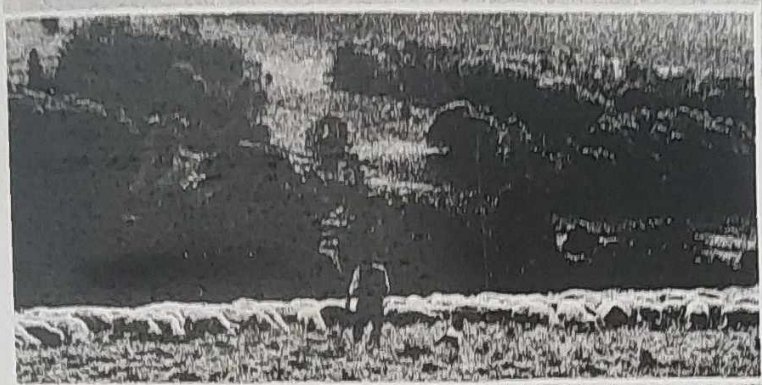

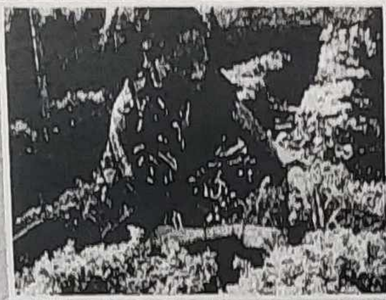

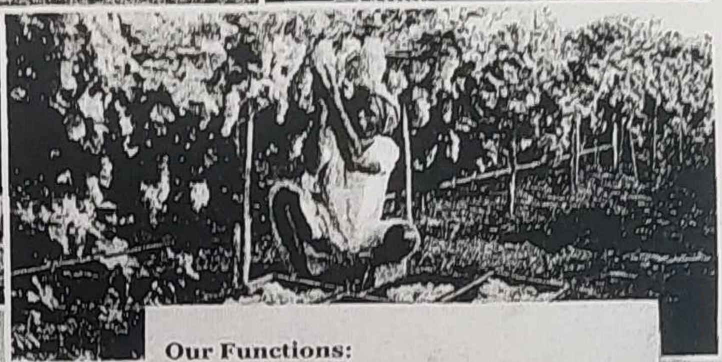

Our Functions:

- Provide Credit/Refinance for production credit and investment credit to eligible banks and financing institutions.
- Development functions undertaken through Farm Sector Promotion Fund (FSPF), Financial Inclusion Fund (FIF), Watershed Development Fund (WDF), Tribal Development Fund (TDF), Rural Infrastructure Development Fund (RIDF), etc.
- Supervisory functions in respect of Cooperative Banks and Regional Rural Banks.

Our Mission: Promotion of sustainable and equitable agriculture and rural prosperity through effective credit support, related services, institution development and other innovative initiatives.

- Research and Development on matters of importance pertaining to agriculture, agricultural operations and rural development including the provision of training and research facilities.
- Consultancy services related to Agriculture & Rural Development through subsidiary (NABCONS).

Head Office Plot C-24, 'G' Block Bandra Kurla Complex, Bandra (East) Mumbai - 400 051

www.nabard.org   YouTube /nabardonline   Taking Rural India >> Forward

Inclusive
Agriculture Growth in India

Chief Editor

Dr. Huchhe Gowda
Assistant Professor

Co- Editors

Dr. Talwar Sabanna
Professor and Director
Dr. D.N.Patil
Professor and Chairman
Dr. (Smt) M.S.Adi
Professor
Dr. Kiran Kumar

Department of Studies in Economics
School of Business and Economics
Rani Channamma University, Belgaum, Karnataka, India

Current Publications
Agra-282 010, U.P. (India)

First Edition, 2017
ISBN : 978-93-8480301-8

© Publishers
All rights reserved. No part of this publications may be reproduced in any form with out the written permission of publishers.

Published By :
Current Publications
A-15 Kalakunj, Maruti Estate Road,
Opp. R. D. Higher Sec. School
Maruti State, Shahganj - Bodla Road,
AGRA-282 010
Mob. : 09457780387, 09557458853
E-mail : Currentpublications001@gmail.com

Laser Typesetting By :
R.K. Offset
Naveen Shahdara, Delhi (India)

48	Mechanisation In Turmeric Cultivation – A Study In Chamarajnagar District Of Karnataka	Sandeep K T Dr. H M Chandreshekar Prof. M Devaraj	364-373
49	An Analysis Of Inequality And Poverty In Urban And Rural Area Of Hyderabad Karnataka Region	ShilpaSree R DrBasavaraj S Benni	374-380
50	Credit Flow To Agriculture Sector In India: Status And Performance	Dr. G. SrikanthaNayak Dr. Ramakrishnappa, Prof.Vishwanatha	381-387
51	Performance of the agricultural credit under banking sector reforms with references to priority sectors –A study	Meghshree M. S Prof. Arabi U	388-396
52	Food Security In India Under WTO Regime: Issues And Challenges	Dr.Suresha. K P	397-402
53	Milk Production In India- Present Scenario, Problems And Policy Interventions.	Surekha N Laindar Prof.Mukta S Adi	403-412
54	Sustainable Water Resources Development For Inclusive Agriculture Growth In India	Mr. Vishwanath A. Khot, Dr. Talwar Sabanna,	413-420
55	"Socio–Economic Security Of Farmers Through Contract Forming – A Case Study Of Davanagere District"	Katera Shivakumar Dr.P S Sashidhar	421-427
	Farmers Suicide In India And Karnataka: An Economic Analysis	Sanganagouda Patil Dr.V. Sharada	428-436
60	An Economic Analysis Of Expenditure On Agricultural Development Works Through Mgnrega In Karnataka	Odegouda R. T	437-442
62	Inclusive Growth In India: Issues And Challenges	Dr. C. Lingappa, Mr. Santosh S Patil	443-449
63	Diversified Cropping Pattern in India	Dr. Sumanth S. Hiremath	450-454
64	Save Peasantry, Save agriculture, Save The country-Government policies only Deepening Agrarian crisis	Gopika N. Kulakarni Dr.H.Gowda	455-458
65	STABILIZING FARM INCOME AND EMPLOYMENT IN DRYLAND AGRICULTURE -AN ANALYSIS OF HYDERABAD KARNATAKA REGION	Kadajji Shivappa Dr. Akram Basha S.B	459-465
66	Agrarian Crisis In India-Reassurance With Sustainable Practices	Jincy Mathew M	466-471
67	Agriculture Credit	YallammaT Battase Krishnappa Siddappa Singe	472-477
68	Agricultural Marketing in India-Present Scenario	Lakshman Naik N	478-481
69	Importance of Agriculture	Miss. Deepa Jahagirdar Prof.N. Chandrappa	482-485
70	Women Agriculture: The Voice Unheard	Shweta S Gaonkar	486-492

STABILIZING FARM INCOME AND EMPLOYMENT IN DRYLAND AGRICULTURE -AN ANALYSIS OF HYDERABAD KARNATAKA REGION

Kadajji Shivappa

Assistant Professor & HOD, Dept. Economics, ARM First Grade College, Nijalingappa Layout, Davanagere,

Dr. AkramBasha S.B

HOD, Dept. of Commerce, ARM First Grade College & PG Centre, Nijalingappa Layout, Davanagere,

Abstract

India continues to be an agricultural economy even after the long spell of development for past sixty years or more. There is no significant change in occupational structure as 65 per cent of population still seeks its livelihood from agriculture.Its contribution to national income though has declined still has significant. The decline in sectoral share has not brought about any significant changes in employment. The knowledge of resources and their availability, economic constraints in the efficient allocation of such resources, adoption of generated agricultural technology in the increase of production, employment and income stabilization in agriculture sector is exceedingly pertinent.Therefore, in this study made an attempt to analyse the cost structure, farm income and employment situation in agriculture in general and dryland in particular.

Key Words: Dryland, Employment, Farm Income, Generation, Stabilization

1. Introduction

India continues to be an agricultural economy even after the long spell of development for past sixty years or more.There is no significant change in occupational structure as 65 per cent of population still seeks its livelihood from agriculture.Its contribution to national income though has declined still has significant.The decline in sectoral share has not brought about any significant changes in employment.Therefore, the importance of this sector has continued over the time period so such as that if Indian agriculture goes wrong nothing else has a chance to go right. Most of the India's agriculture is dryland (Rain fed) as the area under irrigation is only 37 per cent.Large sections of India's poor consisting of small and marginal farmers as well as the landless reside and depend on agriculture and related activities in the dry regions for their livelihood.

The development and prosperity of the dry regions thus hold the key to the economic development and prosperity of the country as a whole.The knowledge of resources and their availability, economic constraints in the efficient allocation of such resources, adoption of generated agricultural technology in the increase of production, employment and income stabilization in agriculture sector is exceedingly pertinent.Therefore, in this study made an attempt to analyse the cost structure, farm income and employment situation in agriculture in general and dryland agriculture in particular.

2. Objectives

The major objectives of the present study are:

- To analyse the cost structure, income and employment in the study area.
- To suggest the suitable recommendations in creation of employment opportunities in agriculture and allied activities and also to stabilize the farm income.

3. Methods and Tools

*The required primary data were collected through interview by sample dryland farmers in the study area in the agriculture year of 2016.*To analyse the cost of cultivation, income and employmentin the dryland the analytical tools such as 't'-test,Pearson's chi-square test and correlation has been utilized.

The following 't' test formula was employed

$$t = \frac{\overline{M}_1 - \overline{M}_2}{\sqrt{\frac{(N_1-1)S_1^2 + (N_2-1)S_2^2\left[\frac{1}{N_1}+\frac{1}{N_2}\right]}{N_1+N_2-2}}}$$

X^2 test is a basic test for determining whether what is observed differs from what is expected by chance at a particular level of significance, so the following formula has been utilized to calculate the Chi value.

$$X^2 = \sum \frac{(0-\varepsilon)^2}{\varepsilon}$$

A two-stage stratified random sampling method was used to draw a sample, with village as a primary unit and operational holding as the ultimate unit.*The study region consist of five districts among those the two districts namely Gulbarga and Koppal have been selected those having more dryland. The samples are as follows:*

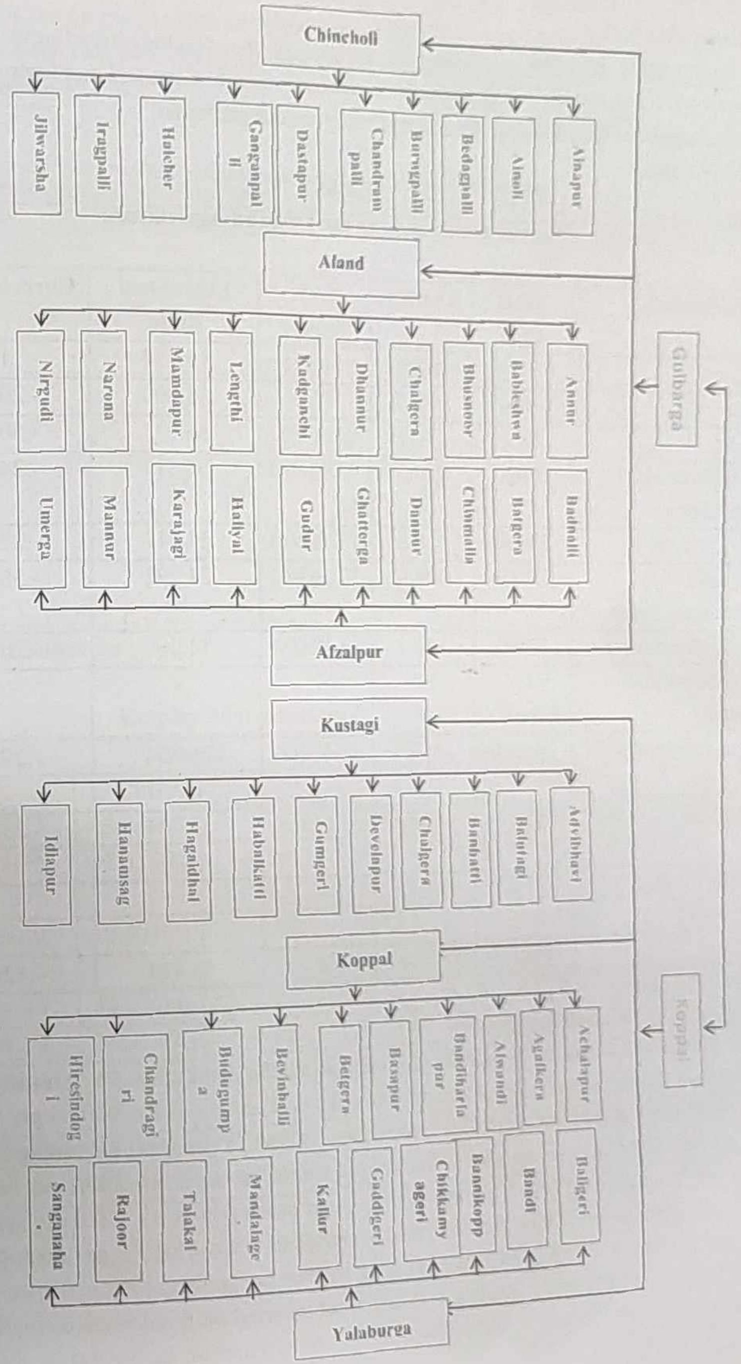

Selection of Taluks and Villages

4 Results and Discussion

This section provides a diagnostic analysis of the drylandagriculturein the Hyderabad-Karnataka region,specifically; it seekstoestimatethecost of cultivation and employment generation in the dryland region of Karnataka in general and study area in particular.

a) Cost Structure

Table-1

Cost of Cultivation in the Dryland Agriculture

(Rs. Per acre)

Particulars	Total Cost	Average	Chi-Square	Likelihood Ratio	Correlation	't' Test
Seed	157510	630.04	14.931	15.174	-.117	-2.720
Manure	147445	589.78	14.724	15.096	-.206	-5.485
Fertilizer	279219	1116.88	62.500(b)	66.725	-.500	-2.603
Hired Human and Animal Labour	50050	200.2	15.156(b)	15.517	-.246	5.106
Plant Protection	29000	116.0	13.752(b)	13.917	-.271	-0.824
Repair and Maintenance Charge	227450	909.8	32.533(b)	33.292	-.361	-0.613
Hired Implements	37100	148.4	14.124(b)	14.269	-.267	-4.273
Land Revenue and other taxes	1155	5.0	-	-	-	- 107.184
Rent paid for leased land	391100	1564.4	31.612(a)	33.724	-.298	-8.071
Rental value of owned land	391180	1564.4	31.612(a)	33.724	-.298	-8.071
Imported value of family labour	171129	684.52	-	-	-	-
Total	**1882335**	**7529.00**	**47.564(a)**	**50.414**	**-.436**	**-9.295**

Source: Field Survey

Note: Have expected count less than 5.

The costs incurred by the farmers for cultivation ofdryland crops on various components per acre has been shown in the table 1. Farmers incurred a cost on seed is Rs. 630.04 per acre, chi-square value of is 14.931 and 't' value is 2.720, on manure Rs. 589.78 per acre, chi–value is 14.724 and 't' value is-5.485. Cost incurred on a hired human and animal labour is Rs. 200.2 per acre, chi-value is 15.156 and 't' value is -5.105. Cost incurred on plant protection is Rs.116.0 per acre, chi-value is 13.752, and 't' value is – 0.824. Cost incurred on fertilizer is Rs. 1116.88 per acre, chi-value of this 62.50, and 't' value is -2.603. Cost incurred by the formers on repair and maintenance is Rs. 909.8 per acre, chi-value is 32.533 and't' value is – 0.613. Cost incurred on hired implements is Rs, 148.4 per acre, chi-value is 14.124 and't' value is – 4.273. Cost incurred on land revenue and other taxes is

Rs.5.0 per area. Cost on rent paid for leased land is Rs. 1564 per area, chi-value is 31.612 and 't' value is – 8.071. Cost on rental value of owned land is Rs. 1564.4 per area chi-value is 31.612 and't' value is – 8.071. Total cost incurred by the farmers for cultivation per acre is Rs. 7529.00, chi-value is 47.564 and't' value is -9.295.

Figure-1

Cost of Cultivation in the Dryland Agriculture

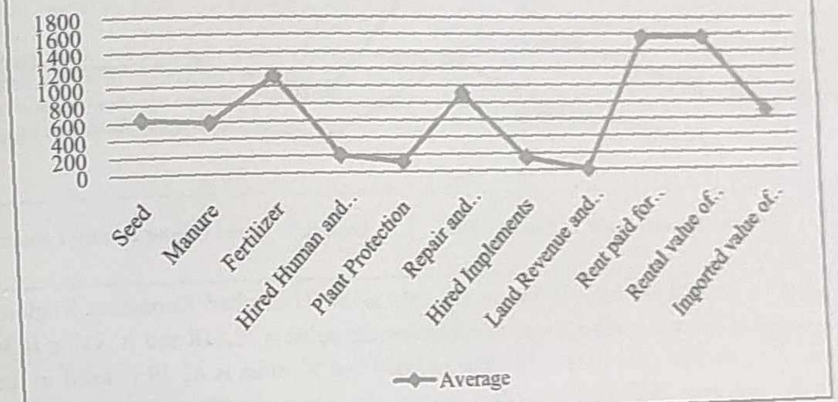

b) Employment Situation

Table- 2

Employment Situation in Dryland Agriculture

Labours	Khariff				Rabbi			
	Average	Chi-Square	Correlation	't' Test	Average	Chi-Square	Correlation	't' Test
Men Labours	19.30	32.518(a)	-0.361	34.38	17.55	3.038(a)	-0.106	42.39
Women Labours	26.89	10.601(a)	-0.202	54.17	24.09	29.56(a)	-0.338	43.71
Total	46.06	38.676(a)	0.368	70.55	41.41	8.682(a)	-0.181	37.68
Bullock	19.14	23.012(b)	-0.303	37.59	16.61	11.34(a)	-0.213	37.17
Hired Labour	23.56	67.415(a)	-0.390	34.63	20.30	22.73(a)	-0.272	23.27
Family Labour	22.66	18.046(a)	0.238	34.94	21.27	4.633(a)	0.105	32.01

Source: Field Survey

Note: Have expected count less than 5.

Figure- 2

Employment Situation in Dryland Agriculture (in Man Days)

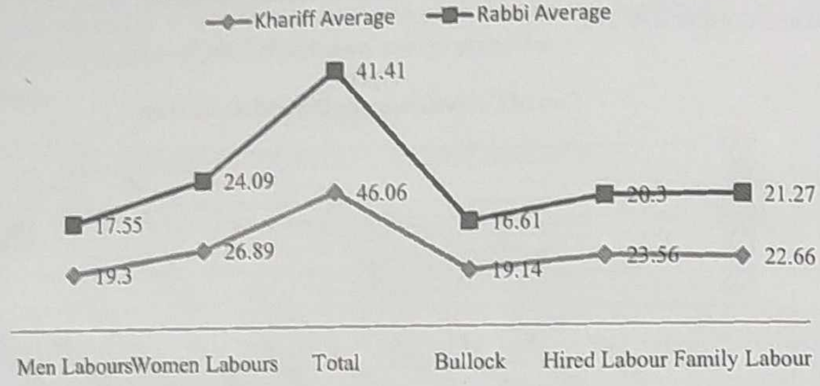

Table 2 presents the information on situation in the Hyderabad Karnataka Region. Total 19.30 days of men labour is using per acre of cultivation chi-value is 32.518 and 't' value is 34.38 in khariff and 17.55 days of men labour, chi-value is 3.038 and 't' value is 42.39 is used in the rabbi season in the study area. 26.89 days of women labours, chi-value is 10.601 and 't' value is 54.17 is used in the study area. 19.14 pair days of bullock labour is used in the khariff season chi and 't' values of these are 23.012 and 37.59 and in the rabbi season 16.16 pair days of bullock labours is using, chi and 't' values are 11.34 and 37.17. In the khariff season 23.56 days of hired labours is used for acre of cultivation, chi and 't' values are 67.415 and 34.63 and in the rabbi season 20.30 days of labours is using, chi and 't' values are 22.73 and 23.27. In the khariff season 22.66 days of family labours is using, chi and 't' values are 18.046 and 34.94 and in rabbi season 21.27 days of family labours is using, chi and 't' values are 4.633 and 32.01.

5. Conclusion

The prosperity of an economy depends upon the efficient utilization of land as well as the conservation and exploitation of free gift of natural resources.It is an era of technology.Though production and employment depend on the so many factors, but the most dominating factors among them are the risk-taking capacity and adoption of modern methods of cultivation which depends upon the size of land holdings of the farmers. Dryland farming is a risky enterprise at best.Although a major constraint to dryland agriculture is deficient water, hazards such as insects, diseases, hail, high winds and intensive rain can destroy crops in a matter of minutes or days. The key to improving the sustainability of dryland farming systems is to halt any further deterioration of the natural resources base, that is, agricultural land, and the associated loss of soil productivity. This can be achieved largely by implementing sound soil and water management practices. Achieving long term sustained growth in the productive capacity of dryland agriculture will require sound decisions and cooperative efforts by national governments and donor organizations based on accurate assessments of problems and potentials of the natural resources.

Reference

1. Arbind Prasad and Jagdish Prasad (1994), "Development Planning for Agriculture", Mittal Publications, New Delhi, P. 385.
2. Dantwala, M.L. (1986), "Indian Agricultural Development since Independence – A Collection of Essays", Oxford and IBH Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi, P. 519.
3. Jasbir Singh and NarinderdeepSingh, (2004), "An Evolution of Resource Conditions and Availability: ACase Study of ChenaniWatershed", Indian Journal of Agriculture Economics, Vol. 59, No.3.
4. Joshi, P.K, (2004), "Watershed Development in India: Synthesis of Past Experiences and Needs for Future Research", Indian Journal of Agriculture Economics, Vol. 59, No.3.
5. Khan, S. (1989), "Agricultural Modernization in India", Anmol Publications, New Delhi, P. 158.
6. Nirmal Singh and Jain K.K, (2004), "Long Time Impact Evolution of Watershed Development Projects in Punjab," Indian Journal of Agriculture Economics, Vol. 59, No.3.
7. Ratna Reddy and John Soussan, (2004), "Assessing the Impact of Watershed Development Programmes: A Sustainable Rural Livelihoods Framework", Indian Journal of Agriculture Economics, Vol. 59, No.3.

National Bank for Agriculture and Rural Development

NABARD

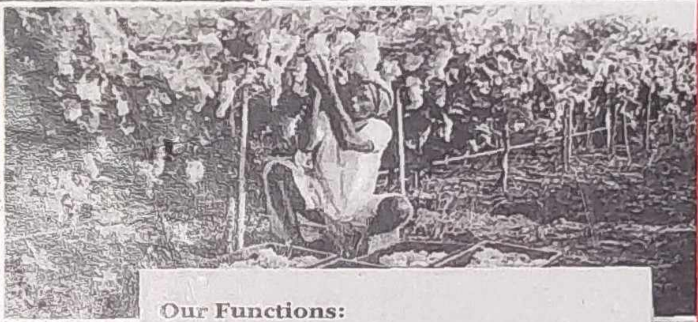

Our Mission: Promotion of sustainable and equitable agriculture and rural prosperity through effective credit support, related services, institution development and other innovative initiatives.

- Research and Development on matters of importance pertaining to agriculture, agricultural operations and rural development including the provision of training and research facilities.
- Consultancy services related to Agriculture & Rural Development through subsidiary (NABCONS).

Our Functions:

- Provide Credit/Refinance for production credit and investment credit to eligible banks and financing institutions.
- Development functions undertaken through Farm Sector Promotion Fund (FSPF), Financial Inclusion Fund (FIF), Watershed Development Fund (WDF), Tribal Development Fund (TDF), Rural Infrastructure Development Fund (RIDF), etc.
- Supervisory functions in respect of Cooperative Banks and Regional Rural Banks.

Head Office Plot C-24, 'G' Block Bandra Kurla Complex, Bandra (East) Mumbai - 400 051

www.nabard.org YouTube /nabardonline Taking Rural India >> Forward

Rs : 1500.00

9789384803018

C/P

CURRENT PUBLICATIONS
A- 15, Kalakaunj, Maruti State Road
Opp. R.D. Higher Sec. School
Shahganj-Bodla Road, Agra-282010
Mob. 09457780387, 09557458853
Email-currentpublications001@gma